21वीं शताब्दी और पानी का महत्व

"Water, Water Everywher
not a drop to drink.
In 21st century,
even a drop shall make us Think"

आधुनिक युग, जब हम तेजी से 20वीं शताब्दी को शानदार ढंग से पीछे छोड़ते हुए 21वीं सदी की ओर निरंतर परिश्रम के साथ, अग्रसर हैं तो भूतकाल को देखने पर हमें भरसक हर्ष की अनुभूति होती है और गर्व से हम बाग-बाग हो उठते हैं। जब हम मनुष्य की सफलताओं और उल्लेखनीय उपलब्धियों को देखते हैं तो मनुष्य हजारों कीर्तिमान स्थापित करने के उपरांत भी मौलिक तौर पर असंतुष्ट है। एक समस्या का समाधान अगर मिल भी जाता है तो उसके समक्ष दो और समस्याएं सिर उठा कर मनुष्य का उपहास करती हैं।

पृथ्वी का 1/4 भाग जल से विद्यमान है। हर तरफ पानी ही पानी व्याप्त है किन्तु यह जल मनुष्य के सेवन योग्य नहीं होता क्योंकि जल में अनेक प्रकार के जीव जन्तु, खाद्य पदार्थ एवं अनेक प्रकार की जड़ी बूटियां होती हैं। अतः वह जल पीने योग्य नहीं है, अपनी रासायनिक रचना की महत्ता खो देता है।

हमारी शारीरिक संरचना कुछ ऐसी है कि जल इसका मूल है। वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि मानव शरीर की रचना मूल रुप से जल के साथ अनुबंधित है। जल की मात्रा शरीर में 75 प्रतिशत तक है। मानव शरीर का अस्तित्व जल के बिना पूर्ण रुप से अधूरा है क्योकि यह न केवल आतंरिक रुप से बल्कि बाह्य जीवन में भी अत्यधिक उल्लेखनीय है। भवन निर्माण, कला उद्योग, ग्रहस्थ जीवन, इन सब में पानी को आधार माना गया है। परन्तु अगर हम दूसरे पक्ष पर ध्यान दें तो यह निष्कर्ष आता है कि जल एक ऐसा स्रोत है, एक ऐसा द्रव्य है जो कि जीवन का मूल है। जिस रफ्तार से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है उसे ध्यान में रखते हुए पानी के संकट का रुप धारण किए हुए विशाल काय दैत्य का निवारण कर पाना असंभव सा जान पड़ता है१

मनुष्य का जीवन एक ऐसा जीवन है जो कि प्राकृतिक स्रोतों के बिना अधूरा है। प्राकृतिक स्रोतों की कमी के कारण इसकी कल्पना भी असंभव है। दिन-प्रतिदिन हमारा समाज उन्नति कर रहा है एवं भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सफलताऐं भी अर्जित कर रहा है। इन सभी उपलब्धियों का श्रेय अगर किसी को जाता है तो वो केवल जल है।

प्रकृति द्वारा प्रदान किया गया जल एक ऐसा स्रोत है जिसका हमें कोई मूल्य नहीं चुकाना पड़ता । यह एक अमूल्य देन है परन्तु सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है।

औद्योगिक क्रान्ति के कारण आज हर देश में कई छोटे बड़े उद्योग पनप रहे हैं। सर्वाधिक संख्या में कल कारखाने लगाए जा रहे है जिससे कि पानी के स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। कारखानों में से निकलने वाला कूड़ा करकट नदी नालों को समर्पित किया जा रहा है। जिस कारण जल के साथ वातावरण निरंतर दूषित होता जा रहा है और भविष्य में

कु. इन्दु बाला, गुरु नानक महिला महाविद्यालय, लुधियाना

होता रहेगा, अगर आज मानवता ने इस बढ़ते हुए प्रदूषण पर अंकुश न लगाया। प्रदूषित पानी पर मच्छर, मक्खियां, कीड़े मकौड़े अपनी पहचान बनाते हैं और अनेक प्रकार की भिन्न-भिन्न बीमारियाँ फैलाते हैं जिससे कि समस्त जन-जाति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। पानी के प्रदूषण को रोकने के लिए समस्त मानव जाति को कंधे से कंधा मिलाकर इसका निवारण खोजना होगा। हमें कारखानों से निकलने वाली गंदगी के प्रवाह को रोकना होगा और हमारा यह कार्य किसी एक के करने या कहने पर संभव नही हो पाएगा। इसके लिए हम सब का यह दायित्व है कि हम इस पक्ष पर ध्यान दें एवं इस अमूल्य सम्पत्ति को नष्ट होने से बचाएं।

धार्मिक स्थानों पर समूह स्नान की प्रक्रिया को रोकना होगा। नदियों नालो में नहाने कपड़े धोने एवं मवेशियों को नहलाने के प्रचलन को रोकना होगा। जनसंख्या की वृद्धि को देखते हुए कल का विकराल रुप साफ नजर आ रहा है। जब आदमी बाल्टियां भर-भर कर नहाने की बजाए, पौधों पर पानी छिड़कने वाले सप्रिंकलर के साथ हफ्ते में एक बार नहा कर ही खुद को संतुष्ट करने के लिए प्रयत्न करेंगे। हर ओर रेलवे स्टेशन सा वातावरण बना जाएगा जब बड़ी बड़ी लम्बी कतारें, जो कि अब रेलवे टिक्टि या राशन के लिए लगी हैं, वह पानी के लिए भी लगने लगेंगी।

भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी व मारधाड़ के किस्से एवं समाचारों से भरे समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठों पर पानी की कमी के कारण होने वाले शोषण की सुरखियां ही अंकित होंगी। जल प्रबंध बढ़ाने के नए-नए क्रांतिकारी उपाय निकाले जाएंगे। वित्त बैंको की तरह अनेक जल बैंक भी अस्तित्व में आएंगे जहां पर थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पानी जमा किया जाएगा जिस पर सरकार एवं निजी जल संस्थाऐं पानी पर ब्याज के रुप में पानी देने लगेंगी। कहने का भाव यह है कि अगर हम एक गिलास पानी जमा कराते हैं तो साल बाद आपको सवा दो गिलास प्राप्त होगा।

दवाइयों की दुकानों की मात्रा में भी बढ़ोतरी होगी क्योंकि दवाईयां तो कम परन्तु जल के कैप्सूल एवं जल टौनिक ज्यादा मात्रा में बिक्री करेंगे। कपड़ों की दुकानों पर कपड़ा नही होगा बल्कि कागज की पोशाकें बिकेंगी क्योकि जब कपड़ा धोने तक के लिए पानी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलेगा तो लोग कागज के कपड़े ही पहनेंगे।

पेय पदार्थों, जैसे दूध व दूध से प्राप्त होने वाली वस्तुओं की भरपूर कमी पेश आएगी क्योकि मानव का स्वार्थी स्वभाव शुरु से ही जानवरों को अपने हित के लिए पालता आया है जब मनुष्य के पास खुद पीने के लिए पानी नही होगा तो वह मवेशियों को क्यों और कैसे पिलाएगा। मवेशी भी एक दिन डायनासोर की तरह अजायबघरों की शोभा बढ़ाएंगे।

सोने की भांति पानी की स्मगलिंग भी खुलेआम होगी। विदेशों से पानी का आयात होगा जिस पर कम्पयूटर और विदेशी सामान की तरह भारी कस्टम लगेगा। यह सब लिखने का तात्पर्य है कि मानवता इस भयंकर परिस्थिति का सामना न करने के लिए अभी से ही इस ओर ध्यान दे ताकि हम पानी का मोल पहचाने और अपनी वनस्पति को बढ़ाने की ओर ध्यान आकर्षित करें। किसी ने ठीक ही कहा है " जान है, जहान है" । परन्तु आज की अवस्था कुछ ऐसी बनी हुई है कि अगर हम यूं लिखें या कहें कि "जल है, जहान है" तो ज्यादा सार्थक सिद्ध होता है।

वनस्पति को बढ़ाने के पूर्ण उपाय करने होंगे। जगह की कमी के कारण हमें कुछ ऐसे उपाय करने होंगे जिससे वनस्पति बरकरार रहे। रुढ़ि, बंजर धरती एवं मकान की छतों पर भी पेड- पौधे लगाने चाहिए। ऐसा करने से पेड़-पौधों की जड़ों में पानी संचित हो जाएगा जिससे हमें पानी की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा। क्योंकि पेड़ ही एक ऐसा स्रोत है जो कि बारिश कर सकने में समर्थ हैं। हमें यह सावधानी इसी लिए बरतनी है क्योकि विज्ञान चाहे कितनी भी उपलब्धियां हासिल कर ले पर पानी का विकल्प खोजने, बनाने व उत्पन्न करने में अभी तक नाकामयाब रहा है। "पानी

वह द्रव्य है जो आज की प्रलंयकारी परिस्थिति में बनाया तो नहीं, परन्तु बचाया जरुर जा सकता है" ।

इस पानी रुपी नैया के हम ही किनारे हैं, हम ही साहिल हैं व इसके माझी भी हम हैं। जिस प्रकार माझी नैया को डूबने से बचाने के लिए नदी के प्रवाह का सदुपयोग करता है हमें भी अपनी पानी रुपी नाव को बचाने के लिए अनेक जल प्रबन्ध की योजनाओं का समय - समय पर सदुपयोग करना है। जो सभ्यताएं पुराने समय में अस्तित्व में आई थीं उनका विकास भी पानी के स्रोतों के आस-पास व साथ-साथ हुआ था। सभ्यताओं के बीच कला, नृत्य, खाद्य-पदार्थ, वस्त्र, औजार आदि चीजों का आदान प्रदान नदियों के कारण ही संभव हो पाया।

औद्योगिकीकरण, पाश्चात्य सभ्यता की ही देन है जो कि दूसरे देशों तक जल माध्यम से ही पहुंचा। वहां के निवासी नागरिकों के रुप में दूसरी सभ्यताओं से मिलने, उन्हें जानने के लिए लम्बी-लम्बी यात्राओं पर निकले और अपनी-अपनी जानकारियों का आदान-प्रदान किया। एक देश से दूसरे देश भारी भरकम, विशालकाय खाद्यपदार्थ लाना, ले जाना भी बड़ी बड़ी नावों, स्टीमरों व जहाजों द्वारा पानी के ही माध्यम से संभव हो पाया है। समुद्र विशाल काय वनस्पति व जीव-जन्तुओं का भण्डार है जो कि मनुष्य के उत्थान के लिए उपयोग किया गया। समुद्र में रासायनिक खोजें, धातु औद्योगिकीकरण व आदमी की कार्य क्षमता बढ़ाने में सहायक रही है। बहुत से देशों में समुद्री जीव जन्तु इन्हें बड़े चाव से ग्रहण करते हैं जो कि उनकी प्रतिदिन उपयोग में लाने वाली खाद्य सामग्री है।

वह समय भी था जब मनुष्य रात को आठ बजे के बाद बाहर विचरण नहीं करता था और अपने आपको घर की चार दीवारी में बंद रखता था क्योंकि उसके पास विद्युत पैदा करने का कोई साधन व तरीका नहीं था। वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा किए गए शोध से व जल के सहयोग से विद्युत का अविष्कार संभव हुआ। आज बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियां व कल कारखाने में बिजली के दम पर नई-नई वस्तुओं को ईजाद किया जा रहा है। आज हमारा जीवन पूरी तरह से बिजली पर निर्भर है जो कि पानी की ही देन है। पानी के दम पर ही सरकार की बड़ी बड़ी योजनाऐं जैसे "हरित क्रान्ति" सार्थक हो पाई हैं जिससे देश में अनाज पर्याप्त मात्रा में पैदा हो रहा है व इसका निर्यात भी संभव हो पाया है। विदेशी पूंजी में बढ़ोतरी हुई है। मवेशियों को भरपूर खाना मिलता है जिससे सरकार की एक और परियो "Operation Flood" भी भारत में जोर पकड़ पाई और सफल रही।

ऊपर लिखित उपलब्धियां जो भी हमने पाई हैं वे सभी जल के कारण ही संभव हो सकी हैं। इसका श्रेय पूर्णतया जल को ही जाता है। कहने का अर्थ है कि :

"जल जीवन का आधार है,
जल बिन, निज जीवन लाचार है"

****